महत्वपूर्ण एवं खास

सेना में सुधार

सरकार ने भारतीय सेना के असैन्य पक्ष के प्रबंधन में बहुत बड़ा सुधार करने का फैसला किया है। नॉन ऑपरेशनल जिम्मेदारियों में तैनात 57 हजार अफसरों और सैनिकों की नए सिरे से तैनाती करके उन्हें ऑपरेशनल भूमिकाओं में लगाया जाएगा। इसके लिए सेना से जुड़े कई गैर-जरूरी विभागों को बंद कर दिया जाएगा और एक ही तरह के काम में लगे विभागों को एक साथ मिला दिया जाएगा। सशस्त्र बलों की क्षमता बढ़ाने के लिए पूर्व रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर के कार्यकाल में रक्षा मंत्रालय ने लेफ्टिनेंट जनरल (रिटा.) डी. बी. शेकतकर की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक कमिटी गठित की थी। इसकी कई सिफारिशों को रक्षा मंत्री अरुण जेटली ने मंगलवार को मंजूरी दे दी। भारतीय सेना में सुधार की बातें समय-समय पर उठती रही हैं। बीच-बीच में कभी गोला-बारूद की कमी, कभी रक्षा संसाधनों की खरीद में गड़बड़ी, कभी पैसे के अपव्यय तो कभी जवानों के असंतुलित व्यवहार की खबरें आती रहती हैं। हालांकि ऐसी खबरों के कारणों पर जनसामान्य के दायरे में ज्यादा चर्चा नहीं हो पाती क्योंकि हमारे देश में सेना को एक पवित्र क्षेत्र का दर्जा प्राप्त रहा है, जिस पर टीका-टिप्पणी करना ठीक नहीं समझा जाता। हमारी फौज का गठन ब्रिटिश शासन में उसकी जरूरतों के अनुरूप एक साम्राज्यवादी सेना के ढांचे पर किया गया था। इसमें अफसरों और जवानों के कुछ खास रिश्ते तय कर दिए गए थे। फौजी अफसरों को ऐसी सारी सुविधाएं दी गई थीं जो उन्हें ब्रिटेन से दूरी न महसूस होने दें, साथ में इस देश का शासक होने का एहसास भी कराती रहें लेकिन आजादी के इतने वर्षों बाद घुड़साल, डेरी फार्म, पोलो और गोल्फ के विशाल मैदान वगैरह भारतीय सेना के लिए गैरजरूरी हो चुके हैं। समय के साथ कई ढांचों और रिश्तों को बदल देने की जरूरत थी, पर दुर्भाग्य से यह प्रक्रिया धीमी रही। सेना में कई ऐसे विभाग अब भी कायम हैं, जिनकी अब कोई भूमिका नहीं रह गई है लेकिन उन्हें हटाने की पहलकदमी नहीं की गई, जिसके चलते उन पर नियुक्तियां होती रहीं। इस तरह एक ऐसा तबका खड़ा हो गया, जिसकी सेना के लिए कोई ठोस भूमिका नहीं है। अब यह सूचना ही चौंकाने वाली है कि 57 हजार लोग सैनिक और अधिकारी अब तक नॉन ऑपरेशनल कामों में लगे थे। इन्हें सेना पर बोझ बनाकर रखने की बजाय इनका उपयोग सैन्य संसाधन के रूप में किया जाना चाहिए। तकनीक के इस दौर वे तमाम सरंजाम हटा दिए जाने चाहिए, जो वक्त के साथ अप्रासंगिक हो गए हैं, जैसे सेना का डाक विभाग। आज हर जगह सेनाओं को टेक्नो-सैवी और पेशेवर बनाने पर जोर दिया जा रहा है। उम्मीद करें कि सुधार के इस कदम से भारतीय सेना और ज्यादा चुस्त-दुरुस्त हो जाएगी।

समय लिखेगा तटस्थों का भी अपराध

गाय का हिंदू संस्कृति में विशेष महत्व है। गाय विश्व में एकमात्र पशु है, जिसके मूत्र और गोबर तक की औषधीय उपयोगिता है। डॉ. राजबली पाण्डेय द्वारा संपादित 'हिंदू धर्मकोश' में लिखा है-'गो हिंदुओं का पवित्र पशु है। अनेक यज्ञिक पदार्थ-घी, दुग्ध, दधि इसी से प्राप्त होते हैं। यह स्वयं पूजनीय एवं पृथ्वी, ब्राह्मण और वेद का प्रतीक हैं। भगवान कृष्ण के जीवन से इसका घनिष्ठ संबंध है। वैदिककालीन भारतीयों के धन का प्रमुख उपादान गाय अथवा बैल होता था। गो का क्षीर यज्ञों में सोमरस के साथ मिलाया जाता था, अथवा अन्न के साथ क्षीरोदान तैयार किया जाता था। ऋग्वेद की दानस्तुति में गऊओं के बड़े-बड़े समूहों का उल्लेख किया गया है। गोदान अनेक प्रकार के दानों में महत्वपूर्ण है। स्वतंत्र रूप से गो का दान पुण्यकारक तो समझा ही जाता है, अन्य धार्मिक कार्यों के साथ विवाह, श्राद्ध आदि में भी इसका विधान है। (पृ. 240)' आज भी असंख्य ऐसे परिवार हैं जिनका प्रायः प्रत्येक सदस्य भोजन आरंभ करने से पूर्व गो-ग्रास अलग निकाल कर रखता है। चूंकि अब प्रत्येक शहरी घर में गो-पालन संभव नहीं है, इसलिए वे गो ग्रास एकत्र करके दर-दर भटकती गऊओं को खिला देते हैं। गो-रक्षक हिंदू समाज की यह भी एक विडंबना है कि शहरों और कस्बों में गाय का दूध दुहने के बाद उसे सड़कों और गलियों में जूठन और घास-फूस चरने के लिए निकाल दिया जाता है। यदि प्रत्येक गो-रक्षक सड़कों पर भटकती गायों की सुध लेने लगे तो वह बड़े पुण्य का भागी हो सकता है। परंतु फिलहाल उनका उत्साह संदिग्ध गो-भक्षकों के होश ठिकाने लगाने में जुटा हुआ है। प्रधानमंत्री ऐसे उन्मादियों को चेतावनी भी दे चुके हैं, परंतु उसका कहीं कोई असर नहीं दिखा है। केंद्र सरकार के एक प्रवक्ता ने आशंका जाहिर की है कि गोरक्षा के नाम पर कुछ समाज विरोधी और राष्ट्रद्रोही तत्व भी इनमें शामिल हो सकते हैं। वे देश में सांप्रदायिक तनाव भड़काने के षड्यंत्र में शामिल बताए गए हैं। यह आशंका निर्मूल नहीं हो सकती। इसलिए और भी जरूरी हो गया है कि ऐसे समाज विरोधियों को खोज कर उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाए। अधिक दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि शासन-प्रशासन में उगे लोभ के वटवृक्ष की जड़ें लगातार फैलती जा रही हैं। राजनीति से जुड़े कुटिल और क्रूर लोग गोशालाओं के लिए जन सामान्य से चंदे लेने के अलावा बड़ी मात्रा में शासन से अनुदान प्राप्त करके बड़े घोटाले करने में तल्लीन हैं। इन अनुदानों से जुड़े बटमारों की तादाद बढ़ती जा रही है। भारतीय राजनीति में यह व्याधि काफी पुरानी है। हमारी सामाजिक व्यवस्था और लोक संस्कृति में यदुवंशियों को गोपाल और गोरक्षक माना जाता है। यह समुदाय परंपरागत रूप से गो पालन तथा उसके दूध-दही के व्यवसाय में प्रवृत्त रहा है। परंतु इस समाज की गो पालन की प्रवृत्ति जब राजनीति के हत्थे चढ़ जाती है तो भ्रष्टाचार की अनेक चोर गलियां निकल आती हैं। बिहार के एक बड़े यदुवंशी राजनेता का मवेशियों की खुराक पर हाथ साफ करने वाला चारा घोटाला राष्ट्रीय चर्चा का मुद्दा रहा है। वे नेता अदालत से दंडित भी हो चुके हैं। फिर मामला ठंडा पड़ने लगा तो उनका कुनबा यह मान कर कि जनता की स्मृति अल्पजीवी होती है, दो-ढाई वर्ष बाद फिर से राजनीति में सक्रिय हो गया। गठबंधन की राजनीति में उसे जनसमर्थन मिला और वह बिहार की सत्ता में बड़ा भागीदार भी हो गया था। पिछले कुछ महीनों से सीबीआई ने उनकी 'बुक ऑफ चारा रिकॉर्ड्स' को फिर से झाड़-पौंछ कर नये खुलासे किये हैं, जिनकी अनुगूंज सुप्रीम कोर्ट तक में सुनाई देने लगी है। दरअसल, पाप के घड़े को आप कितने भी जतन से कितनी ही पोशीदगी से छुपाकर रखें, आखिर वह कभी न कभी छलक ही जाता है। तब उसे ढांपना बहुत कठिन हो जाता है। गो माता का ही नहीं, भारत माता का भी दुर्भाग्य है कि यहां की राजनीति सर्वभक्षी हो चुकी है। प्रायः सारी पार्टियों के नेता गाय की पूंछ पकड़कर चुनावी वैतरणी पार करने की जुगत में जुटे रहते हैं। राजनेताओं के अलावा तरह-तरह के आडंबर रचकर लोक आस्था का दोहन करने वाले बहुरूपिये हमारे समाज में मुद्दत से सक्रिय हैं। उनका गोरखधंधा निरंतर चलता रहे, इसलिए वैज्ञानिक विवेक की आंखों पर परदा डालने के लिए वे तरह-तरह के स्वांग रचते रहते हैं। जन-जन को सचेत करने वाली शक्तियों को नैपथ्य में धकेलते रहना उनकी राजनीति और रणनीति का स्थायी कर्मकांड है। कई वर्ष पूर्व देखी राजकपूर की फिल्म 'जागते रहो' के एक बेबाक गीत की ये पंक्तियां याद आ जाती हैं, 'बड़े-बड़े ज्ञानी-ध्यानी देखे, ते दया-धरम के बंदे। राम-नाम जपदे ते खादे गोशाला के चंदे। ओए मैं कोई झूठ बोलियां? कोई ना वे कोई ना। ओए मैं कुफर तौलिया? कोई ना वे कोई ना।' दया-धर्म की ध्वजा उठाकर गोमाता की जय-जयकार करने वाले पार्खंडियों की गोशालाओं के वीभत्स विवरण इन दिनों मीडिया में सुर्खियों बटोर रहे हैं। गऊओं को ठूंस-ठूंसकर बेहद गंदे और दमघोटू तबेलों में तड़फा-तड़फा कर मारने वाले इन नृशंस गोशाला संचालकों को क्या दण्ड दिया जाए? इन गोशालाओं के नरक में काफी संख्या में दम तोड़ चुकी गोओं का जब पोस्टमॉर्टम किया ÷या तो पशु चिकित्सकों ने पाया कि उन अभागिनों के पेट में न चारा था, न पानी। यानी उन्हें भूख-प्यास से तड़फा-तड़फा कर मारा गया। इन गोशालाओं के संचालकों को गोरक्षा के निमित्त लाखों-करोड़ों के सरकारी अनुदान कई वर्षों से मिलते आ रहे हैं। प्रश्न उठता है कि इस तरह की गोशालाओं और बूचड़खानों में फर्क क्या है? प्रश्न यह भी उठता है कि इनको अनुदान देने वाले अफसरों और राजनेताओं के साथ क्या सलूक किया जाए? क्या वे सब भी गोहत्या के पाप के भागी नहीं हैं? जिन गांवों और कस्बों में ये नारकीय गोशालाएं चल रही थीं, अथवा अभी भी चल रही हैं, उनके नागरिक भी नपुंसक मौन कैसे धारण किये रखे? धर्म-कर्म को छोड़ भी दें तो अपनी जन्मजात प्रकृति के कारण ही गाय वंदनीय है। इस तथ्य का पुनःस्मरण जरूरी हो जाता है कि संस्कृत में गाय के बछड़े को 'वत्स' कहा जाता है। उसके प्रति गाय के दुलार से ही 'वात्सल्य' शब्द की व्युत्पत्ति हुई। पुनःस्मरण तो रामधारी सिंह 'दिनकर' की इन पंक्तियों का भी हो आता है-समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याघ्र, जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध।'

कितनी सफल नोटबंदी?

नोटबंदी की ऐतिहासिक घोषणा के करीब 10 महीने बाद बुधवार को रिजर्व बैंक ने आखिरकार बताया कि रद्द हुए कितने नोट उसके पास वापस आए। इसके मुताबिक फैसले के वक्त हजार और पांच सौ के 15.44 लाख रुपये मूल्य के नोट चलन में थे जिनमें से 15.28 लाख करोड़ रुपये मूल्य के नोट रिजर्व बैंक के पास वापस आ गए। माना जाता है कि जो भी नोट बैंक के पास वापस नहीं आते, उतनी रकम की देनदारी उतर जाने के कारण राजकोष को उतने रुपये का फायदा हो जाता है। अनुमान था कि इस कवायद से सरकार को करीब 5 लाख करोड़ रुपये का फायदा होगा, जिसका इस्तेमाल लोक कल्याणकारी योजनाओं में किया जा सकेगा। मगर सरकार को मात्र 16000 करोड़ रुपये का फायदा हुआ, जो दरअसल नुकसान है क्योंकि नए नोट छापने पर आई लागत ही करीब 21000 करोड़ रुपये बैठ गई। इस तरह रिजर्व बैंक का आंकड़ा आने के बाद से ही नोटबंदी की पूर्ण विफलता की घोषणाएं होने लगी हैं। पूर्व वित्तमंत्री पी चिदंबरम ने इसके लिए आरबीआई को धिक्कारा है। बहरहाल, नोटबंदी की विफलता-सफलता का फैसला सुनाने में इतनी जल्दबाजी करना ठीक नहीं है। इसमें शक नहीं कि नकदी के लेन-देन पर नजर रखने और इनकम टैक्स के दायरे से बाहर रह जाने वाली अमीरों की लंबी-चौड़ी जमात को टैक्स नेट में लाने की काफी लंबी कोशिशें अब तक खास कामयाब नहीं हो पाई हैं। नोटबंदी का फैसला इन लाइलाज सी लगती आर्थिक बीमारियों के आखिरी इलाज के तौर पर लिया गया था। इसके जो भी नुकसान होने थे, वे हो चुके हैं। सवाल सिर्फ यह बचा है कि जिस मकसद से यह कदम उठाया गया था, उसमें हम किस हद तक कामयाब हो पाते हैं। क्या इसके जरिये इनकम टैक्स का दायरा इतना बढ़ाया जा सकेगा कि मोटी कमाई करने वाला एक भी व्यक्ति इससे बचकर न निकल सके? नोटबंदी की जांच इस सबसे बड़ी कसौटी पर होनी अभी बाकी है। 2017-18 के टैक्स कलेक्शन के आंकड़े आने के बाद ही यह साफ होगा कि नोटबंदी से टैक्स की वसूली कितनी बढ़ पाई। सरकार को भी अपने आलोचकों को मूर्ख साबित करने के बजाय अपनी ऊर्जा टैक्स नेट को मजबूत बनाने में लगानी चाहिए, ताकि नोटबंदी के दौरान देशवासियों द्वारा दी गई कुर्बानियों का औचित्य साबित हो सके।

गुणों से आदर

एक बार एक चित्रकार सम्राट नेपोलियन के पास गया। नेपोलियन ने चित्रकार को मैले-कुचैले कपड़े पहने देखकर उसका आदर नहीं किया और उसे एक तरफ बैठने का आदेश दे दिया। परन्तु बाद में बातचीत करने पर उसे मालूम हुआ कि वह बड़ा ही कुशल चित्रकार है। अतः जब चित्रकार चलने लगा तो नेपोलियन ने स्वयं उठकर उससे हाथ मिलाया। साथ ही वह उसे द्वार तक छोड़ने भी आया। अचानक ऐसा सत्कार देखकर चित्रकार को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने डरते-डरते सम्राट नेपोलियन से पूछा, 'जब मैं आया था, तब तो आपने मुझे पास बैठने तक नहीं दिया और जाते समय मुझे आप यहां तक छोड़ने आए हैं, इसका क्या कारण है?' नेपोलियन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, 'आते समय जो आदर किया जाता है, वह मनुष्य के बाहरी व्यक्तित्व को देखकर किया जाता है। परन्तु जाते समय जो आदर होता है, वह उसके गुणों को देखकर होता है।'

राशिफल

मेष : गणेशजी कहते हैं कि आप का दिन मिश्रफलदायी है। आज आप थोड़े बीमार एवं बेचैनी का अनुभव करेंगे। शरीर में थकान और आलस्य एवं मन में अशांति की अनुभूति होगी।

वृषभ : आज का दिन सावधानी पूर्वक बिताएं ऐसा गणेशजी सूचित करते हैं। आज किसी भी प्रकार के नए कार्य का प्रारंभ न करें। आज आप का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

मिथुन : आप का दिन आनंद-प्रमोद तथा भोग-विलास में गुजरेगा। विपरीत लिंग के लोगों से भेंट होगी। मित्रों तथा प्रियजनों के साथ मनोरंजनपूर्ण प्रवास हो सकता है। वाहन सुख मिलेगा।

कर्क : गणेशजी कहते हैं कि आप का दिन अच्छी तरह से गुजरेगा। घर में शांति तथा आनंद का वातावरण रहेगा एवं सुखमय प्रसंग बनेंगे। आप जो भी कार्य करेंगे उसमें यश प्राप्त होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

सिंह : आज का दिन आनंद से गुजरेगा। आज आप अधिक कल्पनाशील बनेंगे। प्रियतम के साथ हुई भेंट शुभ फलदायी होगी। दिन भर मन प्रसन्न रहेगा। संतान की प्रगति के समाचार मिलेंगे। छात्रों के अभ्यास के लिए बहुत अच्छा समय है।

कन्या : आज का दिन आपके लिए अच्छा नहीं है ऐसा गणेशजी कहते हैं। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। कई परेशानियों के कारण मन व्याकुल रहेगा। स्वजनों के साथ अनबन रहेगी।

तुला : आप का दिन शुभ फलदायी होगा ऐसा गणेशजी कहते हैं। धन लाभ के योग हैं। विदेश से अच्छे समाचार आएंगे। व्यवहारिक प्रसंग के कारण यात्रा कर सकते हैं। नए कार्यों के आरंभ के लिए शुभ दिन है।

वृश्चिक : गणेशजी के कहने के अनुसार आज साधारण लाभ का दिन है। व्यर्थ के खर्चे पर रोक लगानी होगी। परिवार में झगड़े न हों इसका विशेष ध्यान रखिएगा। कुटुंब के सदस्यों के बीच की गलतफहमी को दूर करें।

धनु : गणेशजी सूचित करते हैं कि आप शारीरिक तथा मानिसक स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आज आप निर्धारित कार्य कर सकेंगे। आर्थिक लाभ की प्राप्ति होगी। प्रवास की संभावनाएं हैं।

मकर : आज के दिन आपको सावधानीपूर्वक रहने की सूचना गणेशजी देते हैं। आज व्यवसायिक कार्यों में सहकारी हस्तक्षेप बढ़ेगा। खर्च सामान्य से अधिक रहेगा।

कुंभ : गणेशजी कहते हैं कि नए कार्यों के आयोजन का प्रारंभ करने के लिए आज का दिन शुभ है। नौकरी तथा व्यापार में लाभ होने की संभावना है। लक्ष्मी की कृपा दृष्टि आज आप पर है।

मीन : गणेशजी कहते हैं कि आपका दिन अत्यंत शुभ फलदायी होगा। आज आपके लिए कार्यसफलता और उच्च अधिकारियों की की कृपादृष्टि के कारण प्रसन्नता भरा दिन रहेगा।

साख गयी सरकार की

भाजपा और उसके नेतृत्व वाली केंद्र सरकार को यह अधिकार है कि वह 25 अगस्त को पंचकूला समेत हरियाणा के कुछ शहरों में हुई हिंसा के बावजूद मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को क्लीन चिट या अभयदान दे दे। तर्क भी दिया जा सकता है कि किस राज्य में कौन उसकी सरकार का नेतृत्व करेगा-यह भाजपा का आंतरिक मामला है, लेकिन किसी भी सरकार की कुछ संवैधानिक जिम्मेदारियां होती हैं, उससे जनआकांक्षाएं होती हैं, और उन्हीं पर उसके कामकाज को कसा भी जाता है। ऐसे में केंद्र सरकार और भाजपा द्वारा खट्टर को अभयदान के बाद यह सवाल अनुत्तरित है कि क्या हरियाणा सरकार इन और ऐसी ही अन्य कसौटियों पर खरा उतरी? गत शुक्रवार को सीबीआई की विशेष अदालत द्वारा डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को दो साध्वियों के यौन-शोषण का दोषी ठहराये जाने के बाद खासकर पंचकूला में जैसी हिंसा हुई, उसे अराजकता कहना ज्यादा सही होगा। कई दिन पहले से ही राम रहीम के अनुयायियों या डेरा प्रेमियों का पंचकूला में जमावड़ा शुरू हो गया था। मीडिया समेत सभी जागरूक वर्ग इस जमावड़े की मंशा और तैयारियों को लेकर आशंकाएं भी जता रहे थे। कुछ मीडिया खबरों में यह भी साफ तौर पर कहा गया था कि ये अनुयायी खुला पेट्रोल-डीजल भी खरीद रहे हैं, जो किसी सुनियोजित साजिश की ओर इशारा करता है। उनके पास हथियार होने की बात भी कही गयी, लेकिन इस सबके बावजूद लाखों डेरा प्रेमियों के जमावड़े के प्रति खट्टर सरकार मूकदर्शक बनी रही। किसी भी सरकार की ऐसी उदासीनता का वही परिणाम हो सकता था, जो हुआ। दरअसल तमाम आशंकाओं के इजहार और चेतावनियों के बावजूद खट्टर सरकार ने खतरे के प्रति जैसी उदासीनता दिखायी, जो मिलीभगत वाली किसी गहरी साजिश का इशारा करती है।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. व्यर्थ, अकारण, बेवजह (उर्दू) 4. साथ में, सहित 5. वर्षा, बारिश, बरखा 8. कथा, किस्सा 9. चिढ़चिड़ा, बदमिजाज 11. प्रलय, आफत, हलचल 12. लाख ढकने का कपड़ा 13. पिता, क्लर्क, सम्मानित व्यक्ति 14. वायु, पवन 16. निवास करना, उपस्थित होना, ठहरना 18. जिसे लात खाने की आदत हो गई हो 19. सेवक, दास, चाकर 21. भ्राता 22. मेघ, जलद, नीरद।

ऊपर से नीचे
1. विशेष, विशिष्ट 2. सुगंध, खुशबू 3. आदमी, मनुष्य, मानव 5. अपेक्षाकृत, अपेक्षया 6. कष्ट, दर्द, दिक्कत 7. पठन, पढ़ने का काम, शिक्षा 10. किस्मत, नसीब, भाग्यवान 12. एक पक्षी जो पुराने समय में संदेश वाहक का काम करता था 13. बाल, बच्चा, लड़का, छोकरा 17. वायु संबंधी, हवा में रहने, उड़ने या होने वाला, बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल 19. नाव, कश्ती 20. वर्ष, बरस, एक इमारती वृक्ष।

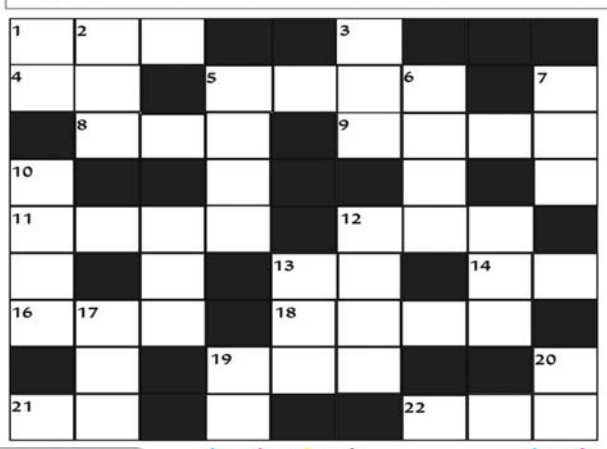

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 59 का हल

पं	क्ति		स्वा	द		स	ब	ब
जा		सु	हा	ना			ली	द
ब	हु	धा		द	ल	ना		ल
		क	मा	न		ग	ह	ना
भं	व	र				वा	म	
गी	त		म	ज	बू	र		ट
	न	म	स्का	र				र
		र्या			बी		ना	का
सं	वि	दा		ब	स	च	ल	ना

सू-दोकू

	9		1	6		2		7
3								
		6					9	
7			5		1		3	
	8			9		6		2
		4					7	
	3				2	9		6
6		7	3					4
	4			1		7	8	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.59का हल

2	6	3	9	8	7	1	5	4
8	5	1	3	2	4	6	7	9
9	4	7	1	5	6	8	2	3
3	9	8	6	7	1	5	4	2
6	1	2	5	4	3	9	8	7
5	7	4	8	9	2	3	1	6
1	2	6	7	3	5	4	9	8
4	8	5	2	6	9	7	3	1
7	3	9	4	1	8	2	6	5

C M Y K